आचार्य कुमारनन्दी

जीवन-परिचय : ये अपने समय के विशिष्ट विद्वान थे। आचार्य विद्यानन्द ने अपने ग्रन्थ प्रमाण-परीक्षा में इनका उल्लेख किया है। तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक पृष्ठ 280 में भी कुमारनन्दि के वादन्याय का उल्लेख किया है।

ये अकलंकदेव के आस-पास के विद्वान हैं, क्योंकि इनके वादन्याय पर सिद्धिविनिश्चय के जल्पसिद्धि प्रकरण का प्रभाव है। कुमारनन्दि भट्टारक विद्यानन्द से पूर्ववर्ती हैं।

रचना-परिचय : आपके द्वारा लिखित एक ही ग्रन्थ है—

1. **वादन्याय :** कुमारनन्दि का वादन्याय नाम का एक महत्त्वपूर्ण तर्कग्रन्थ प्रसिद्ध रहा है। खेद है कि यह ग्रन्थ अप्राप्य है।